मधुबन ओम् शान्ति अंक 295 फरवरी 2017

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र
(11-01-17)

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति स्नेही, सदा परमात्म प्यार में लवलीन, दिलाराम के दिल में रहने वाले सभी दिलतख्तनशीन, विश्व कल्याण की सेवा पर उपस्थित निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर यादप्यार स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - इस तपस्या मास में चारों ओर बहुत अच्छी तपस्या की लहर चल रही है। सभी योग भट्ठियां कर रहे हैं। मीठे बापदादा ने भी इस नये वर्ष के लिए हम सबको बहुत अच्छा होमवर्क दे दिया है। बाबा कहते बच्चे, अब संकल्पों के बहाव को रोककर एकरस स्थिति के आसन पर बैठ अन्तीन्द्रिय सुखमय जीवन का अनुभव करो। कैसा भी वायुमण्डल हो, कैसी भी बातें हों लेकिन आप बच्चों की प्रैक्टिस ऐसी हो जो एक सेकण्ड में जिस स्थिति में स्थित होना चाहो, उस स्थिति में स्थित हो जाओ। तो बोलो, यही प्रैक्टिस चल रही है ना। इस वरदानी मास में बहुत अच्छी तपस्या करके फिर फरवरी मास में प्यारे शिव भोलानाथ बाबा की जयन्ती खूब धूमधाम से मनानी है। यह मीठे बाबा के अवतरण का 80 वां वर्ष है। पिछले 80 वर्षो में देश विदेश के कोने-कोने में कितनी बेहद की सेवायें हुई हैं। कमाल है मीठे बाबा की, जो निराकार सो साकार फिर अव्यक्त रूप से कितना प्यार और पालना दे रहे हैं! तो इस वर्ष हम सब मिलकर अपनी अतीन्द्रिय सुखमय जीवन द्वारा विश्व के कोने-कोने में बाप को प्रत्यक्ष करने की सेवायें खूब धूमधाम से करेंगे।

मैं तो कहती हूँ बाबा, आपने हमको दुनिया से न्यारा और अपना प्यारा बना दिया है। इससे कितना सुख पाया है। अब यही भावना है कि ऐसा सुख सबको मिले, सभी अपना मुक्ति-जीवनमुक्ति का जन्म सिद्ध अधिकार बाबा से ले लेवें। जैसे हम सभी एक के नाम से एकानामी से चले हैं। वो चला रहा है, हम चल रहे हैं। लोगों को पता नहीं है कौन कर रहा है, कौन करा रहा है! करावनहार करा रहा है, करने वाले करके अपनी कमाई जमा कर रहे हैं। हर एक सिम्पल रह करके सैम्पल बन गये हैं। साकार बाबा के जो लास्ट शब्द हैं बच्चे निराकारी, निर्विकारी, निरंहकारी होकर रहना। तो यह तीनों बातें हम सबकी लाइफ में हों। अब घर जाना है इसलिए निराकारी स्थिति में रहना है। संगमयुग पर बी.के. भी सच्चा अच्छी क्वालिटी वाला सम्पूर्ण पावन बनना है। किसी से हमको जैलसी ना हो, यह बना है, मैं नहीं बनी हूँ, यह भी अभिमान है इसलिये चेक करना है कि कभी भी हमारे से अभिमान का अंश दिखाई न दे। बाप, शिक्षक और सतगुरू के रूप में बाबा से जो पाया है वह काम में आता है इसलिए दिल कहता है कि यह भी बाबा का लायक बच्चा बन जाये। लायक माना लाइट रहे, माइट खींचे। इज़ी है लाइट रहने से कोई बोझा नहीं, सेवा का भी बोझा नहीं है, भाग्य है। बाबा ने खुशी की खुराक खिलाई है इसलिए हम कभी चिंता नहीं करते। सदा खुशनसीब वो हैं जो चिंता से मुक्त हैं, सदा हर्षितमुख हैं।

बोलो, हमारे मीठे-मीठे भाई बहिनें ऐसी ही प्रैक्टिकल जीवन अनुभव होती है ना। हमारे दिल में बाबा है, हम बाबा के दिल में हैं इसलिए दिमाग में और कोई बात नहीं है। यह भी कितना बड़ा भाग्य है जो देह, देह के सम्बन्ध में न अटके हैं, न चटके हैं। कभी कोई बात में मूँझते भी नहीं है। तो यही भावना है कि आप सब भी ऐसे बन जायें।

अच्छा - सभी को इनएडवांस आने वाली 80 वीं त्रिमूर्ति शिवजयन्ती की बहुत-बहुत बधाई हो।

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

"चलन और चेहरे द्वारा सेवा करो"

1) बापदादा को प्रत्यक्ष करने के लिए आपके चलन और चेहरे से ईश्वरीय नशा और नारायणी नशा दिखाई दे। चेहरा ही आपका परिचय दे। जैसे कोई के पास मिलने जाते हो तो परिचय के लिए अपना कार्ड देते हो, इसी रीति से आपका चेहरा परिचय कार्ड का कार्य करे तब प्रत्यक्षता होगी। जो सच्चे सेवाधारी हैं उन्हें और कोई सेवा भले नहीं मिले लेकिन वह अपने चेहरे से, चलन से सेवा करते रहेंगे। उनका चेहरा बाप का साक्षात्कार करायेगा, चलन बाप की याद दिलायेगी, यही नम्बरवन सेवा है।

2) आज की दुनिया में जबकि चारों ओर दु:ख और अशान्ति के बादल छाये हुए हैं, ऐसे वायुमण्डल में आपका चेहरा सदा चियरफुल हो तो स्वत: सबको आपसे मिलने की उत्कण्ठा होगी। जैसे जब बहुत तूफान लगते हैं या वर्षा पड़ती है तो उस समय लोग जहाँ बारिश तूफान से बचाव देखते हैं, वहाँ न चाहते भी भागते हैं। ऐसे ही वर्तमान समय चारों ओर दु:ख और अशान्ति के बादल गरज रहे हैं। ऐसे समय में सेफ्टी के साधन को देख आपकी तरफ आकर्षित होंगे।

3) आप ब्राह्मण बच्चे बहुत-बहुत रॉयल हो। आपका चेहरा और चलन दोनों ही सत्यता की सभ्यता अनुभव करायें। वैसे भी रॉयल आत्माओं को सभ्यता की देवी कहा जाता है। उनका बोलना, देखना, चलना, खाना-पीना, उठना-बैठना, हर कर्म में सभ्यता सत्यता स्वत: ही दिखाई देती है। ऐसे नहीं कि मैं तो सत्य को सिद्ध कर रहा हूँ और सभ्यता हो ही नहीं। तो यह राइट नहीं है।

4) रूहानी रॉयल्टी का फाउण्डेशन सम्पूर्ण पवित्रता है। तो अपने से पूछो कि रूहानी रॉयल्टी की झलक और फलक आपके रूप वा चरित्र से हर एक को अनुभव होती है? नॉलेज के दर्पण में अपने को देखो कि मेरे चेहरे पर, चलन में वह रूहानी रॉयल्टी दिखाई देती है या साधारण चलन और चेहरा दिखाई देता है?

5) अपने इस चेहरे को सदैव हर्षित बनाना - यह संगमयुग की सबसे बड़ी गिफ्ट है। चेहरे पर कभी भी कोई परेशानी की रेखा न हो। जैसे सम्पूर्ण चन्द्रमा कितना सुन्दर लगता है वैसे अपना चेहरा सदैव हर्षित रहे। चेहरा ऐसा चमकता हुआ हो जो और भी आप के चेहरे में अपना रूप देख सकें। चेहरा दर्पण बन जाये।

6) ब्राह्मण परिवार में फर्स्ट नम्बर का कल्चर है - ''सभ्यता''। तो हर एक के चेहरे और चलन में यह ब्राह्मण कल्चर प्रत्यक्ष हो। हर ब्राह्मण मुस्कराता हुआ हर एक से सम्पर्क में आये। कोई कैसा भी हो आप अपना यह कल्चर कभी नहीं छोड़ो।

7) यदि निश्चय रूपी फाउण्डेशन पक्का है तो सहज योगी, निर्मल स्वभाव, शुभ भावना की वृत्ति और आत्मिक दृष्टि वाले होंगे। चलन और चेहरे से हर समय सरलता की झलक अनुभव होती रहेगी।

8) निर्माणचित आत्मायें कारण वा समस्या को पॉजिटिव समाधान बनायेंगी। उनके चेहरे पर कभी कमजोरी का, कोमलता का चिन्ह नहीं होगा इसलिए निर्माण बनो, कोमल नहीं। कोमल उसे कहते हैं जो पानी का फल हो। ऐसे नहीं पानी डालो और बह जाये वा मुरझा जाए।

9) सदा परमात्म दिलतख्तनशीन रहो तो बेफिक्र बादशाह रहेंगे। मन में भी कोई बोझ न हो। चलन और चेहरे में थकावट के चिन्ह न हों, सदा डबल लाइट रहो। सदा सपूत, आज्ञाकारी बन परमात्म दिलतख्त के अधिकारी बनो। तो चलन और चेहरा स्वत: सेवा करेगा।

10) ब्रह्मा बाप अपने हर बच्चे के चेहरे पर, एक तो सदा रूहानियत की मुस्कराहट देखना चाहते हैं और दूसरा - मुख से सदा मधुर बोल सुनना चाहते हैं। एक शब्द भी मधुरता के बिना नहीं हो। चेहरे पर रूहानियत हो, मुख में मधुरता हो और मन-बुद्धि में सदा शुभ भावना, रहमदिल की भावना, दातापन की भावना हो। हर कदम में फालो फादर हो, यही पालना का रिटर्न दो।

11) सदा अपने चेहरे और चलन से औरों को भी उमंग दिलाते रहो। आपकी ऐसी चलन हो जो कोई भी देखे तो सोचे कि ये उमंग-उत्साह में सदा कैसे रहते हैं? उमंग-उत्साह ही उड़ने के पंख हैं। अगर पंख मज़बूत होंगे तो तीव्र गति से उड़ सकेंगे।

12) जैसे ब्रह्मा बाप के सूरत वा सीरत की पर्सनैलिटी थी तब आप सब आकर्षित हुए, ऐसे फालो फादर करो। सर्व प्राप्तियों की लिस्ट बुद्धि में इमर्ज रखो तो चेहरे और चलन में प्रसन्नता की पर्सनैलिटी दिखाई देगी और वह पर्सनैलिटी हर एक को आकर्षित करेगी।

13) आप बच्चे बाहर के रूप में भल साधारण पर्सनैलिटी वाले हो लेकिन रुहानी पर्सनैलिटी में सबसे नम्बरवन हो। आपके चेहरे पर, चलन में प्योरिटी की पर्सनैलिटी है। जितना-जितना

जो प्योर है उतनी उनकी पर्सनैलिटी न सिर्फ दिखाई देती है लेकिन अनुभव होती है और वह पर्सनैलिटी ही सेवा करती है।

14) ब्राह्मण जीवन में जिस ब्राह्मण आत्मा में सन्तुष्टता की महानता है – उनकी सूरत में, उनके चेहरे में भी सन्तुष्टता और श्रेष्ठ स्थिति के पोजीशन की पर्सनैलिटी दिखाई देती है। उनके नयन-चैन में, चेहरे और चलन में सन्तुष्टता की पर्सनैलिटी दिखाई देती है। उनका चित्त सदा प्रसन्न होगा, दिल-दिमाग सदा आराम में, सुख-चैन की स्थिति में होगा, कभी बेचैन नहीं होंगे। वे हर बोल और कर्म से, दृष्टि और वृत्ति से रूहानी पर्सनैलिटी और रॉयल्टी का अनुभव करायेंगे।

15) जैसे ब्रह्मा बाप साधारण तन में होते भी पुरुषोत्तम अनुभव होते थे। सभी ने देखा या सुना है। अभी अव्यक्त रूप में भी साधारण में पुरुषोत्तम की झलक देखते हो! ऐसे फालो फादर। काम भल साधारण हो लेकिन स्थिति महान् हो। चेहरे पर श्रेष्ठ जीवन का प्रभाव हो। हर चलन से बाप का अनुभव हो–इसको कहते हैं ब्रह्माचारी।

16) कोई कैसा भी आग समान जला हुआ, बहुत गरम दिमाग का हो लेकिन आपका चेहरा ऐसी प्रसन्नता से भरपूर हो जो आपके वायब्रेशन की छाया में वह भी शीतल हो जाये, इसके लिए दूसरों की कमजोरी, देखते-सुनते उसके प्रभाव में नहीं आओ। उनका वर्णन भी नहीं करो। सुनो, सहन करो और समा लो।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 04-05-13 *मधुबन*

"त्याग तपस्या और सेवा का बल हो तो अन्दर से निकलेगा जो हो रहा है अच्छा, जो होगा वह बहुत अच्छा"

(दादी जानकी)

जीते जी मरे माना आप मुए मर गई दुनिया। बाबा के बच्चे एक बार मरजीवा लाइफ में आने के बाद कोई कहते मैं रोती नहीं हूँ, पर उदास होती हूँ वो कौन हैं? साकार में बाबा कहता था जो उदास होता है वो दास-दासी बनेंगे इसलिए बाबा का कहना है कुछ भी होता है तो ज्ञान का हलवा बनाओ, अच्छी तरह से खाओ और खिलाओ। मुस्कराने से मुश्किल बात भी चली जाती है। मुस्कराने से कोई बात मुश्किल नहीं लगती, सोच में नहीं पड़ते हैं। ऐसी स्थिति बनानी हो तो क्या करें! बहुत खबरदार रहना होगा, एक भी भूल न हो। ऐसे सुपात्र बाबा के बच्चे जो आज्ञाकारी नम्बरवन, जो भी बाबा ने कहा हाँ जी बाबा कहके किया होगा। जब से बाबा के बने, न कहाँ चलायमान हुए हैं, न कहाँ डोलायमान हुए हैं, 100 प्रतिशत पवित्र क्योंकि चलायमान होना भी अपवित्रता है, डोलायमान होना तो निश्चय की कमी है। बाबा के मुख से निकलता है नथिंग न्यू, मम्मा के मुख से निकलता है ड्रामा। कोई ने शरीर छोड़ा तो मम्मा कहेगी ड्रामा। बाबा कहेगा नथिंग न्यू और क्या कहेंगे? प्रैक्टिकली करके दिखाया है। जरा भी एक चिन्ह मात्र भी नहीं आया होगा, कैसे छोड़ा... यह भी नहीं पूछा होगा। कईयों के जीवन में परिवर्तन इससे आया है। चलते फिरते किसको मुरझाया हुआ देख पूछो नहीं क्या हुआ है! पर मेरी मुस्कराहट को देख वो भी मुस्कराये। कहने का भाव कि नाटक में ना अटको।

त्याग की तपस्या में ही सेवा समाई हुई है क्योंकि वो त्याग और वो तपस्या का बल सेवा के रूप में काम कर रहा है इसलिए पहले त्याग, तपस्या फिर सेवा कहा जाता है। प्रवृत्ति में रहते हुए भी, कार्य-व्यवहार करते हुए भी किनारा नहीं करना है, पर न्यारा होके रहना है। मैं फलाने स्थान से भी जाना चाहती हूँ, मैं फलानी बहन के साथ नहीं रहना चाहती हूँ या मैं इनके साथ नहीं रहना चाहती हूँ... तो यह क्या है? थोड़ा भी यह ख्याल आया, प्रजा पद। अभी यह जो ज्ञान है वो प्राय:लोप हो जायेगा यानि ऐसा समा जायेगा जो सतयुग में भी याद नहीं रहेगा। प्राय:लोप माना अन्दर गुप्त रहेगा, पर दिखाई नहीं पड़ेगा। जिस ज्ञान से देवता बनने के लिए वह सारे गुण धारण कर रहे हैं। सर्वगुण सम्पन्न अभी बन रहे हैं तब तो सतयुग में जायेंगे। थोड़ा भी कोई अवगुण रह जायेगा तो सतयुगी राज्य नहीं मिलेगा। जैसे रूप-बसंत की कहानी है, ऐसे अच्छी-अच्छी बातें मनन-चिंतन करने में राजाई है। मन शान्त है, बुद्धि शुद्ध है, दिल साफ है, श्रेष्ठ सोचने का उनको भाग्य मिला है।

मैंने बाबा से कुछ मांगा नहीं है पर बुद्धि अच्छी दी है, तो बुद्धि को सम्भालना मेरा काम है। बुद्धि को सम्भालेंगे तो योग भी लगेगा, धारणा भी होगी, सेवा भी होगी। पर बुद्धि में थोड़ा भी कोई संकल्प ऐसा अन्दर आ जाता है जो रूखा बना देता है। मैं यह बात कैसे करूँ, यह ख्याल नहीं करना, भारी हो

जायेंगे। थोड़ा भी भारी हो गये तो सेकेण्ड में हल्के हो जाओ तो बाबा देखेगा। बाबा मधुबन में अपने कमरे में बैठा है, हमको वहाँ से देख रहा है, जहाँ भी हम बच्चे हैं। देखके किसी को कुछ कहना होता है तो कहता भी है, पर यह भान होवे ना। तो कभी भी यह बात न भूले हमको घर जाना है, जा रहे हैं। तब बाबा कहता है घर में मुझे याद करो। तो बाबा जो तरीका बताता है, उसी तरीके से सब अभ्यास करके अनुभव करना चाहिए।

बाबा अव्यक्त होते भी कहता है मैं हूँ ना साथ में, यह फीलिंग आये कि बाबा मेरे साथ है। जो हुआ अच्छा, जो हो रहा है सो अच्छा, जो होगा सो अच्छा, यह वही बोल सकेगा जिनके पास त्याग, तपस्या और सेवा का बल है। बाबा ने कहा अच्छे बच्चे वह जो भले शरीर निर्वाह अर्थ कमावें पर अपने ऊपर खर्च न करें या लौकिक के लिए बुद्धि न जावे। तपस्या माना कहाँ बुद्धि न जाये। त्याग माना स्थूल सूक्ष्म सफाई। जहाँ सेन्टर पर सफाई नहीं है वहाँ बाबा को भोग कैसे लगेगा! कोई भी एक्स्ट्रा चीज़ रखने की जरुरत नहीं है क्योंकि संगमयुग पर भगवान खिलाये, हम खायें, उसी के भण्डारे से बनायें, उसके लिए बहुत अच्छी तरह से सफाई चाहिए। किसी ने कहा आप बाबा को बहुत यूज़ करती हो, मैंने कहा मैं बाबा की यूज़फुल बनूँ इसलिए करती हूँ ना। बाबा के लिए यूज़फुल बनूँ।

दूसरा क्लास

"ऐसे गुणग्राही बनो जो मेरे को देख दूसरों का अवगुण चला जाये"

जो सदा ही सुख-शान्ति में रहते हैं उसको सम्पन्न बनना पॉसिबुल है। सम्पन्न माना सुख-शान्ति में सम्पन्न, सम्पत्तिवान। परिवर्तन माना अपने में सम्पूर्ण सम्पन्नता लाना। लौकिक दुनिया में कोई थोड़े होते हैं जो सम्पत्तिवान भी होते हैं परन्तु धर्मात्मा होते हैं, पुण्यात्मा होते हैं, लौकिक का कोई अभिमान नहीं होता है। धर्मात्मा जो होते हैं, सच्ची दिलवाले बड़ी दिलवाले होते हैं। आप कौन हो? देवता बनने वाली आत्मा पहले धर्मात्मा बनती है। हर कर्म उनका श्रेष्ठ होता है। सफल करने में बहुत गुप्त होते हैं। तो प्रैक्टिकली अगर ऐसी जीवन बनती है ना, तो उसके लिए अति रिगार्ड होता है। शिवबाबा ने ब्रह्माबाबा को निमित्त बना करके सिखाया है, वह प्रैक्टिकल कौन करता है? क्योंकि प्रैक्टिकल करने का प्रभाव बहुत होता है। तो गुणग्राही बनना माना गुण का ग्राहक बनना। मेरे को देख किसी का अवगुण चला जाये। ऐसे ऑफर करने वाले बाबा के फूल बच्चे बनो।

(जयन्ती बहन ने दादी जी की क्लासेस से कुछ मुख्य बातें सुनाई) बुद्धि की एक्सरसाइज करने से बुद्धि छोटी या मोटी नहीं होगी। जब स्वच्छता हमारे अन्दर होती है तब सत्यता हमारे अन्दर ठहर सकती है इससे आत्मा को आनंद का अनुभव प्राप्त हो सकता। इस एक एक बात की गहराई में जाओ तो बहुत सारी बातें निकल आती हैं। भगवान ही मेरा संसार है तो मेरे संस्कार भी भगवान समान बन सकते हैं। ज्ञान और योग का सार यही है कि हम सबके साथ ताल-मेल बना करके रखें, सबसे पहले तो हमारी स्थिति ऐसी हो जो हम औरों के साथ मिलजुलकर संगठन में एकरस स्थिति में रह सकूँ और संगठन को एकमत बनाकर रख सकूं।

तीसरा क्लास

"पुण्यात्मा वह है जो अच्छे संग में रहे, सबको अच्छा संग दे, सदा श्रेष्ठ कर्म करें"

जो मंथन नहीं करता है वो मोटी बुद्धि है। ज्ञान है सोल कॉन्सेस रहना, इसके लिए ड्रामा की नॉलेज स्मृति में रहे। सबसे बड़ी बीमारी है - थकना, मूँझना, घबराना। मेरे से नहीं होता है ना अरे, कौन हो! बकरी हो क्या? जितनी भी स्थिति जिसकी है, सेवा और संग, साथ से फायदा होता है।

परिवर्तन मुझे होना है, बाबा देखेगा बच्ची को कोई बात नहीं, सभी देखेंगे इसको और कोई बात ही नहीं है, परिवर्तन क्या होना है? विकर्माजीत बनना है। उसकी निशानी है, कभी भी व्यर्थ संकल्प नहीं आयेगा। जो संकल्प आता है तो वह कर्म में भी आता है। बहुत डीप है। मेरा संकल्प शुद्ध, श्रेष्ठ है तो

इससे मेरे लिए भी फायदा, आपको भी फायदा। एक तरफ मैं विकर्माजीत बनने का पुरुषार्थ कर रही हूँ, दूसरे तरफ कर्म करते कर्मातीत, सम्बन्ध में होते कर्मातीत यानि किसी के साथ हिसाब-किताब नहीं। यह शुद्ध संकल्प भावना वाला संकल्प औरों को भी परिवर्तन करता है। पर पहले मैं ऐसा स्वरूप रहूँ विकर्माजीत, कर्मातीत और श्रेष्ठ कर्म ऐसा हो जो बाबा कैसा था, वह अनुभव करें क्योंकि आप सब भी बैठे हो सिर्फ बाबा का परिचय सुनने से नहीं बैठे हो, बाबा कैसा था, अभी भी कैसा है... जिसको परिवर्तन होना है वह दस बारी बाबा के रूम में जावे। जा करके आधा घण्टा एक घण्टा बैठो, पता चलेगा बाबा कैसा है, उन जैसा मुझे बनना है। मुझे किससे भेंट नहीं करनी है क्योंकि हरेक का पार्ट अपना है। सबका भला हो यह भावना हो तो परिवर्तन मुझे क्या होना है बस, बाबा जैसा! बाबा कैसा था, कैसा है, अभी भी है, अच्छी तरह से काम कर रहा है और ज्यादा कर रहा है। तो जहाँ ऐसे अच्छे स्थान मिले हैं उनका फायदा उठाओ। जब याद में बैठो तो कोई संकल्प न चलें, भले कार्य हुआ, पुरा हुआ। पूछे कोई कैसे किया? देखो वन्डर है, कहो हो गया। सेवा है मुस्कराने की। देखते हैं इतना सब कार्य करते हुए भी खुश रहते हैं।

एक मन की सफाई, दूसरी स्थूल सफाई न होती तो बीमारियां हो जाती, तीसरा मुस्कराना न आता हो तो भी बीमार कहेंगे। यह परिवर्तन की घड़ियां है, अभी मुझे होना है तो बाबा और परिवार एकदम साथ देता है। परिवार का प्यार बहुत काम करता है। सब बातों का ज्ञान तो है ना, मेरा पूर्व जन्म का या इस जन्म का भी कोई कर्मबन्धन हो, किसी के साथ भी, भले वह मेरे बहन भाई या पति पत्नि हैं, जन्म ही लिया या शादी भी किया, वह पूर्व जन्मों के कर्मों अनुसार। पर अभी उस लौकिक लाइफ का अंश मात्र भी न हो, जैसे बाबा, यह मेरी बहू है, यह मेरी वाइफ है, यह भान नहीं रहा। बाबा के बने हैं तो भाग्यवान हैं, पर ईश्वरीय परिवार में चलते-चलते किसके साथ कोई हिसाब-किताब ऐसा होता है जो रियलाइज नहीं करते हैं, बढ़ाते रहते हैं, वह फिर चुक्तू करने के लिए बड़ी रियलाइजेशन चाहिए। यह हमारी अभी की लाइफ ही डिफरेन्ट है। हम क्या थे, क्या हैं...। पहले थे बॉडी-कॉन्सेस, अभी सोल-कॉन्सेस हैं।

तो सम्बन्ध में न्यारे हो करके रहो, किसको दु:ख नहीं दो, ऐसे अच्छे कर्म करेंगे, आज्ञाकारी रहेंगे तब आशीर्वाद मिलेगी। जब मैं अच्छी बनेंगी तब आप सब से दुआयें मिलेगी। मैं अच्छे संग में रहूँ, औरों को यह संग दूँ, यह है पुण्यात्मा बनना। बाबा देखता है बच्चा देह-अभिमान को छोड़, न्यारा बन मेरी याद में बैठा है तो बाबा का प्यार मिलता है। यह शक्ति है याद में। जैसे साकार में बाबा को देखने से अशरीरी हो जाते थे फिर ऐसी ही आदत डालनी है। योग के वायब्रेशन से औरों को साक्षात्कार होगा, कइयों को मधुबन का साक्षात्कार यहाँ बैठे होता है। मधुबन आते हैं तो मधुबन को देख भूलते नहीं हैं, तो वह शक्ति चला रही है। सब राज़ी-खुशी हो तो दुआयें सबकी चला रही है, बाबा की अलग हैं, बाबा दुआओं के साथ गुप्त सकाश भी देता है। शिवबाबा कहता है मैं इनसे कराता हूँ, मैं नहीं करता, ऐसी देही-अभिमानी स्थिति, ईश्वरीय स्नेह में सम्पन्न हो। तो बाबा को ऐसा लायक बच्चा चाहिए जो बाबा का नाम बाला करने के निमित्त बने।

चौथा क्लास

"सच्चाई, प्रेम और विश्वास का अनुभव करने के लिए अभिमान और निराशा रूपी अवगुण से मुक्त रहो"

जो जिस लक्ष्य में निश्चय रखते हैं, उस अनुसार वह लक्षण आते ही हैं। जिसका साथी है भगवान उसको क्या करेगा आंधी और तूफान, इसमें निश्चय की बात नहीं है। निश्चय बुद्धि है उसका प्रैक्टिकल अनुभव किया है। उसी अनुभव से हम कहते हैं तो उसमें विश्वास बैठता है। सच्चाई, प्रेम, विश्वास अन्दर से न सिर्फ बीज पड़ा है बल्कि उसका फल खा रहे हैं। यह सच्चा नहीं है पर तुम सच्ची बनो। अन्दर से सच्चाई, प्रेम और विश्वास से सारा कार्य चल रहा है, इसी से कई कार्य सफल हुए हैं। मैंने ही किया तो यह अभिमान या मैं नहीं कर सकती हूँ तो निराशा, यह दो अवगुण सच्चाई, प्रेम और विश्वास का अनुभव करने नहीं देते हैं। जो मेरे से औरों को भी फल मिले, जो बाबा कहता है इसके लिए पुरुषार्थ करना पड़े। दादियों में कोई ज्यादा पढ़ा लिखा नहीं है लेकिन उनकी सच्चाई, प्रेम और विश्वास से आज यह अव्यक्त पालना हो रही है। तो हम लोगों में जो निश्चय का बल भरा है, उनसे अनेक प्रकार की बेहद सेवायें हुई हैं, हो रही हैं, अन्त तक होती रहेंगी।

गति सद्गति दाता बाप है उसने माताओं, शक्तियों को आगे रखा है। निश्चय का यह प्रैक्टिकल सबूत है कि उनका रिकॉर्ड अच्छा होगा और वही बड़ों का रिगार्ड रखेंगे। पूर्वजों को रिगार्ड देने से उनके सूक्ष्म वायब्रेशन बड़ी शक्ति दे रहे हैं, सब शक्तियाँ हाज़िर हैं। कमजोरी की बातें न सुनना, न सुनाना। कोई भी सरकमस्टांश आदि की लम्बी बात नहीं करना क्योंकि बाबा कौन है? कैसा है? क्या खुद करता है? कैसे कराता है? यह कभी बैठके सोचो, ज्ञान की गहराई में जाओ तो यह सारी बातें आपेही खत्म हो जायेंगी। यह है प्रभु लीला। तो ऐसे परमात्मा के अन्त में जाना, बेअन्त खुशी को पाना, जिसका कोई पारावार नहीं। तो सुख नहीं कहेंगे, बेअंत खुशी, वह खुशी बांटेगा। कोई भी उसके सामने आयेगा तो वह खुशी देगा। इतना खुशी जो बेफिकर बादशाह, बिगर कौड़ी बादशाह प्रैक्टिकली बाबा ने प्रमाण बनाया है। निश्चय से विजय पाई है, सच्चाई से यहाँ पहुँचे हैं, तो सम्भलके बोलो, सम्भलके सोचो। रीस नहीं करो, रेस भले करो।

"व्यर्थ और निगेटिव से बचने की भिन्न-भिन्न युक्तियाँ"

(गुल्जार दादी -1999 का रिवाइज क्लास)

ओम् शान्ति। हमारे ख्यालों में भी और ख्वाबों में भी एक बाबा ही है और बाबा की हम बच्चों प्रति यही आश है तुम मेरे मैं तेरा, न तुम मेरे को भूलो, न मैं तेरे को भूलूँ - यही बाबा चाहता है। जब बाबा याद होगा तो नैचुरल बाबा की याद से जो हम अपने जीवन में शक्तियां या धारणायें चाहते हैं, वह बाबा की याद में समाई हुई हैं ही। तो बाबा कहते हैं बस और कुछ नहीं करो, मुझे भूलो नहीं क्योंकि मेरे को भूलने से ही आपको इतनी मेहनत करनी पड़ती है, अगर तुम मेरी याद में रहो तो आज कोई कामना उठी या क्रोध आ गया, लोभ आ गया ... तो इस मेहनत से छूट जायेंगे और मेरी याद में खो जायेंगे, बस। जो प्यार के आनन्द में खोया हुआ होता है उसको कोई भी बाहर की आकर्षण खींचती नहीं। तो बाबा की भी यही आशायें है और हम सबकी भी वही आश है। लेकिन उसको प्रैक्टिकल में लाने के लिए याद भूले नहीं। इसके लिए बाबा ने अभी तो बहुत सहज तरीका सुना दिया। कोई बहाने बाजी इसमें नहीं चल सकती, बाबा ने इसीलिए 5 बारी ट्राफिक कन्ट्रोल रखा कि भूल भी जाये तो फिर से फट से याद आवे। अभी तक तो बाबा 5 मिनट कहते थे लेकिन अब तो 5 सेकेण्ड ही कहते, ऐसा काम किसी का नहीं है, जो इतना टाइम भी नहीं निकाल सके। सिर्फ यह जरुर है कि इस बात के लिए जो बाबा ने सहज साधन दिया है उसके लिए अपने कुछ नियम वा चार्ट बनाना पड़ेगा क्योंकि हरेक काम की रीति रसम, टाइम, संग, कम्पन्नी भी होती है। इसीलिए बाबा कहते हैं आप ही टाइम निकालो। विधि को सेट करो।

बाबा ने ''मैं आत्मा हूँ'' का पाठ इतना पक्का किया था जो बाबा की सारी डायरी उससे भरी हुई थी कि मैं भी आत्मा, यह भी आत्मा, वह भी आत्मा। और हम लोगों को भी बाबा ने शुरू शुरू में यह आत्मा का पाठ बहुत पक्का कराया। परमात्मा का ज्ञान धीरे-धीरे स्पष्ट हुआ है लेकिन आत्मा का ज्ञान शुरू से ही हम लोगों को मिला। आत्म-अभिमानी बनना यही हमारा मुख्य लक्ष्य और पुरुषार्थ था। इसमें अपने ग्रुप्स बने हुए थे और रेस करते थे जैसे कि हमने 5 मिनट निकाला, तो दूसरे कहेंगे हम 10 मिनट निकालेंगे और फिर तीसरा ग्रुप कहता था रात को 2 घण्टा जागकर और बढ़ाऊंगा ऐसे हम लोग आपस में रेस करते थे। और मम्मा की विशेषता यह थी कि आप घड़ी देखो नहीं देखो, अढ़ाई बजना माना मम्मा की लाइट जलना। हम सबने एक दिन मम्मा को पूछा कि आप इतना जल्दी वह भी रोज़ाना जागकर क्या करती हो? तो मम्मा कहती थी कि मैं योग में आत्म-अभिमानी स्थिति में स्थित होकर बैठती हूँ, दूसरा मम्मा कहती थी मैं रूहों को सकाश देती हूँ, मैं तुम्हारे रूह को भी इमर्ज करके तुमको भी सकाश, शक्ति या लाइट देती हूँ। तो हम लोग इस बात को नहीं समझते थे। अभी तो इन सब बातों का स्पष्टीकरण हमारे सामने है। इसलिए अभी तो वह सब कॉमन बात हो गई है। तो मम्मा ने शुरू से अपनी स्व-उन्नति के लिए इस प्रकार से पुरुषार्थ और पालना की है। तो ऐसे ग्रुप्स को देख एक दो को उमंग आता था, अभी तो अपना इन्डीज्युअल चार्ट रखना, पुरुषार्थ करना यह पावर आ गई है। हर एक अपने आपको जितना मेकप करने चाहें उतना कर सकते हैं।

अभी लास्ट मुरलियों में जो बीच-बीच में आत्म-अभिमानी बनने अथवा 5 सेकेण्ड की ड्रिल करने के लिए बाबा कहता है, उसमें जो बीच में विघ्न पड़ता है वह एक तो हैं व्यर्थ संकल्प

और दूसरा है निगेटिव देखना, सोचना। यह दो विघ्न योग को बहुत नीचें करते हैं क्योंकि मन में ही तो वेस्ट थॉट चलते है। और निगेटिव देखने सोचने की अगर आदत पड़ गई तो हमारी वृत्ति कभी शुद्ध नहीं होगी। तो यह दोनों ही विघ्न हमारी मन्सा शक्ति को नहीं बढ़ा सकते या मनमनाभव होने नहीं देंगे। लेकिन अगर हमारी मन्सा में शुद्धि है, वृत्ति-दृष्टि में निगेटिव नहीं है, शुभ भावना, शुभ कामना की वृत्ति है तो भले हम कितना भी मन को कामकाज में बिजी रखें तो भी हमारी वृत्ति चंचल नहीं होगी। काम पूरा होगा फिर वही वृत्ति आ जायेगी क्योंकि वृत्ति में और कुछ है ही नहीं।

तो हमने सोचा कि कईयों के बूरे थॉट नहीं है, कोई विकल्प नहीं हैं लेकिन जो जरूरी नहीं हैं उसको वेस्ट ही कहेंगे। तो वह वेस्ट थॉट इसलिए चलते हैं क्योंकि हमें अपने मन को बिजी रखने का तरीका नहीं आता है। खाली बुद्धि है तो वेस्ट चलता है, आपको टाइम है तो वेस्ट टाइम भी जायेगा। अगर टाइम ही नहीं है तो वेस्ट कैसे जायेगा। ऐसे अगर मन-बुद्धि, वृत्ति में फ्रीडम है, मन बिजी नहीं है तो वेस्ट जायेगा। और बुद्धि को बिजी रखने के लिए अगर हम बड़े वी.आई.पीज की तरह एक डायरी में 5-5 मिनट का टाइम टेबुल बना लेते हैं तो वेस्टेज़ से बच जायेंगे। हमारे लिए तो अभी संगम का यह थोड़ा सा समय ही पुरुषार्थ के लिए है। बिना संगम के तो कोई यह पुरुषार्थ कर ही नहीं सकता है। संगम के सिवाए तो न शिवबाबा हमको मिलेगा, न सर्व शक्तियां मिलेंगी, न यह अलौकिक सम्बन्ध मिलेगा। तो बाबा ने कहा कि अभी मैं सागर भी हूँ और दाता भी हूँ। और इस खजाने पर कोई ताला चाबी भी नहीं है। सूक्ष्म-वतन में बाबा से मिलने के लिए कोई पहरेदार भी नहीं है। जब चाहो तब वतन में आ जाओ और जितना टाइम चाहे उतना टाइम मिलन मनाओ, रुहरिहान करो। जितना चाहे, जो चाहे वह बाबा से लो।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

"एक बाबा को अपनी ढाल बनाओ तो पुराने सब संस्कार परिवर्तन हो जायेंगे"

बाबा की मुरली तो सब सुनते हैं लेकिन यह मुरली मेरे लिए है, यह दवाई का डोज़ बाबा ने मेरे लिए दिया है, वह तीर के समान समझ लें, ऐसा बहुत कम समझते हैं। इसलिए मुरली पर सबका अटेन्शन एक जैसा नहीं रहता। यह गोली जो शूट हुई यह मुझे ही मारने वाली है, ऐसा कोई मुश्किल ही समझते हैं, अपने प्रति पावरफुल घाव कोई नहीं समझता। बाबा हमारे ऊपर इतनी भिन्न-भिन्न युक्तियों का बाण रोज़ क्यों मारता? क्या यह मुरली शास्त्र की तरह पढ़ने या सुनने तक है, क्या बाबा हमें बहलाने के लिए यह सब टोटके सुनाकर जाते, या यह एक-एक मुरली हमारे प्रति है, यह एक-एक लाखों रुपये का रत्न बाबा मेरे लिए खर्च कर रहा है, क्या मैं एक-एक रतन को इतनी कीमत देती हूँ? यह जो धारणा की मुरली हम सुन रहे हैं, इतना बाबा हमें डीप ते डीप गुह्य बाण लगाता, फिर भी हमारे दिमाग में क्यों नहीं बैठती? पुराने संस्कार मिटते क्यों नहीं? बाबा ने कहा बापदादा से भेंट करो और कमियों की भेंट चढ़ाओ तो क्या मैं बाबा से कदम-कदम पर भेंट करती या आत्माओं के पीछे सारा दिन हमारी दृष्टि घूमती? यह ऐसा क्यों बोलता, यह ऐसा क्यों करता.. बाबा से पल-पल भेंट करनी है, जैसे बाबा हमारा सम्पूर्ण बना हमें भी सम्पूर्ण बनना है - आत्माओं से हमारी भेंट क्यों होती। अगर बाबा से भेंट करते रहो तो यह सब भेंट खत्म हो जायेगी।

बुद्धि को बिजी रखो यदि हमारी बीजरूप पावरफुल स्थिति बनती जावे तो यह सब पुराने संस्कार खत्म हो जायेंगे। बुद्धि को निरन्तर मनन चिन्तन में बिजी नहीं करते इसलिए बुद्धि नीचे की बातें रमण करना शुरु करती। जैसे बाढ़ आती तो बांध दिया जाता है या उसको दूसरी तरफ मोड़ दिया जाता, तो हमारी बुद्धि में संकल्पों की बाढ़ ही क्यों आवे? जो इधर-उधर भटके। बुद्धि ओवरफ्लो क्यों होती? हमको बाबा ने जो ज्ञान दिया है वह आधार ही है सम्पूर्ण बनने का। हमारी बुद्धि निर्मल गंगा के पानी की तरह चलती रहे, ओवरफ्लो नहीं होनी चाहिए।

यह संगम का समय बहुत ही कीमती है, यही घड़ियाँ संस्कारों को परिवर्तन करने की मिली हैं, फिर अगर हम कहें क्या करू - यह संस्कार मिटता ही नहीं, क्या यह कहना शोभा

देता? बाबा को ढाल बनाओ तो सब संस्कार मिट जायेंगे, जो अपने कड़े संस्कारों को बदल सकता वही दूसरों के भी बदल सकता, मायाजीत वाले ही तो दूसरों को भी मायाजीत बनने का साधन दे सकेंगे। बाबा भी इस पुरानी दुनिया में था, उसने भी अपनी सारी जीवन इस दुनिया में बिताई लेकिन क्या बाबा के मुख से कभी किसी ने सुना – क्या करूँ यह मेरा भी पुराना संस्कार मिटता नहीं। किसी ने बाबा की चलन से, बाबा के व्यवहार से कब ऐसा देखा? जब साकार हमारे सामने सैम्पुल था, उसने कभी नहीं कहा तो फिर हमारे मुख से यह शब्द क्यों निकलते? मैं बाबा का हूँ, मुझे बाबा समान बनना है यह है तीव्र पुरुषार्थ। ऐसा लक्ष्य रखो तो परिवर्तन करना मुश्किल नहीं। अगर वर्णन करते मैं क्या करूँ तो यह भी कमी है। दूसरे का संस्कार तो फौरन नोट हो जाता, अपना नहीं। क्यों? स्वर्ग में तो परिवर्तन नहीं होना है, जब करना ही यहाँ है तो ढीलापन क्यों रहता।

सदैव अटेन्शन रहे कि मेरे रजिस्टर में कोई भी नुक्स का मार्क्स नहीं होना चाहिए – अगर कोई नुक्स रह गई तो उसकी सजायें धर्मराज पुरी में तो मिलेंगे ही, लेकिन यहाँ भी बहुत कड़ी सज़ा मिलती हैं। यहाँ का तिरस्कार और सत्कार यही तो धर्मराज के डन्डे हैं, एक सत्कार करता, एक सत्कार लेता। मन की पीड़ायें, संकल्प, संस्कार, स्वभाव की पीड़ायें, दूसरे के वायब्रेशन की पीड़ायें जो आती, यही प्रैक्टिकल धर्मराज के डन्डे हैं। जो सतगुरू बाप की अवज्ञा करता उसे किसी न किसी रूप में यह पीड़ायें अभी ही भोगनी पड़ती। बुद्धि अगर इन सब पीड़ाओं से परे रहे तो बीजरूप स्थिति सहज ही बन जायेगी। अगर पीड़ाओं का घेराव होगा तो बीजरूप स्थिति कैसे बन सकेगी। ज्ञानी को यहाँ ही सब पीड़ायें भोगनी पड़ती। क्योंकि बाबा का जो इतना खजाना मिलता उसका मैंने रिटर्न नहीं किया, तो वह कर्ज हो जाता, उसका बहुत सूक्ष्म हिसाब-किताब बनता है, यह भी कर्मों की गुह्य गति है। जैसे सतगुरु की आज्ञा है अपने आदि संस्कारों में रहना है, अगर मैं नहीं रहती, तो उसकी अवज्ञा हुई, जिसकी फिर बहुत सजा मिलती है।

आपस में कई बार एक दो की बातें सुनने, वर्णन करने से आपस में पर-चिन्तन का चक्र चलने लगता। बाबा ने आपको इसलिए प्रवृत्ति नहीं दी है कि दूसरों की बातों का चक्र रिपीट करो। अगर किसी की कमी का वर्णन आपस में किया तो उसके अन्दर भी वह कमी का भाव भर दिया। नफरत की भावना पैदा कर दी। जोड़ी इसलिए नहीं है कि तेरे मेरे का, वायुमण्डल का चिन्तन करो। इसलिए बाबा कहते शुभचिन्तन में रहो, शुभचिन्तक बनो। दिलवाला तो एक बाबा है उसे दिल दो। आपस में नहीं।

बाबा जानते हैं प्रवृत्ति में अनेक परेशानियाँ हैं। उसके लिए ही बाबा ने अष्ट शक्तियाँ दी हैं। शक्तियों को साथ रखो तो रांग राइट को परख सकेंगे। परेशानियों का हल कर सकेंगे। रावण का काम है हैरान करना। आपका काम है अपनी शक्तियों के स्वमान में रहना।

कर्मबन्धन को योग से तोड़ना है न कि मुख के आवाज से। कोई प्रेम से रहे तो उसका हक है। नहीं तो हरेक का रास्ता अपना-अपना है। परन्तु फिर अन्दर में जो आता समाज क्या कहेगी? लोग क्या कहेंगे? ज्ञान में इस लोक लाज.. को तोड़ना ही पड़ता। अगर लोकलाज में चलेंगे, सिर पर चिन्ताओं की गठरी रखेंगे तो योग लग नहीं सकता। चिंता है चिता। इसलिए जहाँ तक हो सके प्रेम से बाबा की याद में रहकर प्रवृत्ति को चलाओ। जहाँ झगड़ा हो वहाँ शान्ति से नमस्कार। कई बार प्रापर्टी के पीछे झगड़ते, जहाँ झगड़ा है वहाँ शान्ति से फैंसला कर किनारा करो। प्रापर्टी को छोड़ो नहीं, लेकिन उसे बाकायदे लिखापढ़ी कर सबका हिस्सा बांट दो। धन जमीन, जेवर सबका हिसाब-किताब कर लाइन क्लीयर रखो। भविष्य के लिए भी जमा कर लो, ताकि बुद्धि निरसंकल्प रहे।

आपका फर्ज है बच्चों को पढ़ा लिखाकर बड़ा करना। फिर उन्हें दोनों रास्ते दिखाओ। शुभ भावना रखो। बच्चों की जवाबदारी माँ-बाप पर है। उन्हें भी दोनों रास्ते दिखा दो, चिंता छोड़ दो। अपना काम है उनको उस एज तक पढ़ाना। उस कर्मबन्धन को निभाना। फिर जैसी उनकी तकदीर।

जब प्रवृत्ति में दोनों साथ-साथ चलते तो घर का वातावरण योगयुक्त जरूर बनाओ। पीसफुल रहो जो भी भोजन बने उसका नियम अनुसार बाबा को भोग लगाओ। अगर जाइंट फैमिली है तो फल का भी भोग जरूर लगाओ।

मुरली जरूर पढ़नी है, जब तक ज्ञान डांस नहीं की तब तक भोजन नहीं खा सकते। यह भी पक्का नियम हो। लाचारी कारण बस सेन्टर पर नहीं जा सकते तो घर में मुरली पढ़ो। योग में कभी मूँझो नहीं। सच्ची दिल से बुद्धि को बाबा में लगाओ। जितना हो सके अशरीरी बनने का अभ्यास करो। रोज़ सवेरे-सवेरे उठकर अपने भाग्य का गुण गाओ। वाह मेरा भाग्य! वाह बाबा और वाह ड्रामा! गुण गाते रहो तो सदा हर्षित रहेंगे। मन का, आंखों का रोना सब समाप्त हो जायेगा। अच्छा - ओम् शान्ति।